इन बीच जो गुजरे, तिन बरसों की तफसीर।
दस अग्यारहीं तीस बारहीं, और सत्तर की जंजीर।। १६ ।।

इस लीला के बीच में जो होना है उन वर्षों की हकीकत बताती हूं। ग्यारहवीं सदी के दस वर्ष, अर्थात् सम्वत् १७३५ से १७४५ तक तथा बारहवीं सदी के तीस वर्ष, अर्थात सम्वत् १७४५ से १७७५ तक ईसा रूह अल्ला की पातसाही कही है, इसमें प्रथम दस वर्षों में मोमिनों को आत्मिक खुराक तथा पीछे तीस वर्षों में ईश्वरीसृष्टि सहित जागनी होगी। उपरान्त सत्तर वर्ष १७७५ से १८४५ तक पुलसरात यानि शरीयत से जीवसृष्टि की जागनी होगी।

इन दसों उमत खासी चली, दुनी चली तीस भए जब।
पुल-सरात सत्तर कहे, पोहोंची आखिर फरिस्तों तब।। १७ ।।

ग्यारहवीं सदी के इन दस वर्षों में ब्रह्मसृष्टियों को वाणी के उतरने से बहुत आनन्द मिला। बारहवीं सदी के जब तीस वर्ष हुए तो मोमिनों ने वाणी को संसार में फैलाया। इसके बाद सत्तर वर्ष पुलसरात के कहे हैं जो सम्वत् १८४५ तक पूरे होते हैं—इस समय अजाजील फरिश्ता पश्चाताप कर वाणी को ग्रहण करेगा।

पीछे तेरहीं में उठ खड़े, सुख कायम पोहोंचे सब।
आठों भिस्त विवेक सों, हुए नजरों न छूटे अब।। १८ ।।

उसके बाद तेरहवीं सदी में असराफील फरिश्ता कुलजम सरूप की वाणी को जाहिर करके मोमिनों की जागनी करेंगे और फिर सब बहिश्तों के अखण्ड सुख लेंगे। इस तरह से सब दुनियां अपने कर्मों के अनुसार अक्षर की नजर योगमाया में कायम हो जाएगी।

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ ३२८ ॥

चौथे सिपारे में लिखी, सो रोसनी मैं दिल में रखी।
जाहेर करों वास्ते उमत, खोलों बातून आई सरत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान के चौथे सिपारे में जो लिखा है उसे मैंने अपने दिल में संजोकर रखा है। अब उसके बातूनी रहस्य खोलने का समय आ गया है, इसलिए ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते जाहिर करती हूं।

केतों के मुंह उजले भए, केतों के मुंह काले कहे।
कैयों आकीन कई मुनकर, यों लिख्या होसी आखिर।। २ ।।

चौथे सिपारे में लिखा है कि कयामत के समय में कई के मुख उज्ज्वल होंगे और कई के मुख काले होंगे। कई ईमानदार होंगे, कई बेईमान होंगे।

हक ताला ने किया फुरमान, डांटत हैं कीने कुफरान।
अंजील तौरेत से जो फिरे, सोई काफर हुए खरे।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने रास, प्रकास, खटरुती की वाणी भेजी, परन्तु कपट के कारण गादीपति बिहारीजी महाराज ने वाणी जाहिर नहीं होने दी। इस तरह से रास और कलस की वाणी को जिन्होंने नहीं माना, वह पक्के काफिर हैं। बिहारीजी कलस को क्लेश कहते थे।

Nijanand App

काफर दिलमें कीना आनें, अंजील तौरेत पर मारे ताने।
जो खुदाएका पैगंमर, तिनसे फिरे सो हुए काफर।।४।।

रास और कलस की वाणी पर दिल में कपट रखकर व्यंग्य करते थे, ताने मारते थे। श्री राजजी महाराज की कुलजम सरूप की वाणी लाने वाले स्वयं पारब्रह्म हैं। इनकी वाणी को जिन्होंने नहीं माना, वह काफिर हैं।

जुबां आकीन कयामत न मानें, ऊपर इसलाम के कीना आनें।
उनसे जो हुए मुनकर, सोई गिरो कही काफर।।५।।

जो अपनी जबान से कयामत को नहीं मानते और निजानन्द सम्प्रदाय से कपट रखते हैं तथा श्री श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) के चलाए रास्ते पर नहीं चलते, वही पक्के काफिर हैं।

मुनकर हुकम और कयामत, हुए नाहीं नेक बखत।
फंद माहें हुए गिरफ्तार, भमर हलाकी पड़े कुफार।।६।।

जो कयामत को श्री राजजी का हुकम नहीं मानते, उनको आखिरत के समय अच्छा फल नहीं मिलेगा। वह माया के चक्कर में फंस गए हैं और इसी तरह से चौरासी लाख योनियों में भटकने का रास्ता उनके लिए खुला है।

उस्तुवार न पाई सुंनत, ए जो हुए बदबखत।
सुपेत मुंह कहे मोमिन, पाई राह जमात से तिन।।७।।

ऐसे कठिन समय पर जो श्री प्राणनाथजी के समय पर ईमान लाए और दृढ़ता से खड़े रहे, कयामत के समय उनके मुख उज्ज्वल होंगे और यही मोमिन हैं, जिन्होंने श्री प्राणनाथजी की कुलजम सरूप की वाणी से रास्ता पाया।

नव सदी के आगे रोसन, कह्या होसी भिस्तका दिन।
अरफा आगे रोज भिस्त, जाहेर होसी सबों सरत।।८।।

चौथे सिपारे में लिखा है कि नौवीं सदी के बाद दुनियां को अखण्ड करने का काम शुरू हो जाएगा। अर्फा ईद अर्थात् दसवीं सदी के आगे रसूल साहब ने जो वायदा किया था कि कयामत होगी, उसकी बात सबको जाहिर हो जाएगी।

रूहोंका होसी मिलाप, जो बीच दरगाह के आप।
होसी अल्ला का दीदार, मिलसी तीनों इत सिरदार।।९।।

ग्यारहवीं सदी में परमधाम के रहने वाली रूहों का श्री प्राणनाथजी महाराज से मिलन होगा और मोमिनों को श्री राजजी की पहचान श्री प्राणनाथजी के तन में होगी, जिनके तन में बसरी, मलकी और हकी तीनों सूरत इकट्ठी होंगी।

ए हमेसां हैं भिस्तके, नहीं बराबर कोई इनके।
सुपेत मुंह रहें मस्त, खुदाए की राह पर करी है कस्त।।१०।।

यह मोमिन सदा अखण्ड परमधाम के रहने वाले हैं। इनके बराबर और कोई नहीं है। इनके मुख कयामत के समय उज्ज्वल होंगे। स्वामी श्री प्राणनाथजी के साथ खुदाई रास्ते पर निजानन्द सम्प्रदाय में चलते हुए बड़े कष्ट उठाए हैं।

Nijanand App

जो गुजरया बीच इन सूरत, खबर हुकम हकीकत।
ए जो कही आयत साहेब, सो पढ़ी मैं कहे महंमद।। ११ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज और मोमिनों के बीच जो कुछ बीता है, वह सब इशारों से कुरान में लिखा है। आयतों को श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मैंने पढ़ा है।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ३३९ ।।

ए रोज नाहीं खिलाफ, होसी नव सदी आगूं मिलाप।
कलाम अल्ला का जाहेर नूर, अग्यारे सिपारे का जहूर।। १ ।।

कुरान के ग्यारहवें सिपारे में स्पष्ट लिखा है कि नौवीं सदी के आगे रूहों का मिलन शुरू होगा। इस बात को कोई बदल नहीं सकता।

ए लिख्या वास्ते सबब इन, बदले नेक खूब कारन।
बीच राह हकके एक, तिन नेकोंका बदला नेक।। २ ।।

यह इस कारण से लिखा है कि नेकी का बदला अच्छी तरह से मिलेगा। इस समय श्री राजजी महाराज के स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज नेक-चलन वालों को अच्छा फल देंगे।

उनसों ज्यादा मिल्या है जित, बोहोतक सवाब लेना है तित।
बोहोतायत बीच यों नबिएं, सो मिसल गाजियों बीच जाहेर किए।। ३ ।।

श्री देवचन्द्रजी श्यामा महारानी से अधिक वाणी श्री प्राणनाथजी को मिली। इसका सबसे अधिक लाभ लेना है। बोहोतायत किताब के अन्दर रसूल साहब ने लिखा है कि उस कुलजम सरूप की वाणी को अर्श की रूहों में श्री प्राणनाथजी जाहिर करेंगे।

तिन पर बंदगी एक करे कोए, सो हजार बंदगियों से नेक होए।
तिनको सवाब बड़ा बुजरक, देवे एही साहेब हक।। ४ ।।

श्री प्राणनाथजी के ऊपर जो एक सिजदा बजाएगा उसको हजार सिजदों का फल मिलेगा। ऐसा बड़ा लाभ देने वाले श्री राजजी के स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज हैं।

नव सै नब्बे हुए बरस, और नव मास उतरे सरस।
तिनसे दूसरा होए मकबूल, सो ए बंदगियां करे कबूल।। ५ ।।

जब नौ सौ नब्बे वर्ष और नौ महीने मुहम्मद साहब के बाद हुए तब मलकी सूरत श्री श्यामा महारानी देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुए। यही अपने दूसरे तन श्री प्राणनाथजी के अन्दर बैठकर सबकी बन्दगी स्वीकार करेंगे।

सो बकसीस करे सब ए, बदले एक के हजार दे।
इनके बराबर ऐसे कर, कोसिस करे खुदाकी राह पर।। ६ ।।

सभी को उनकी बन्दगी के अनुसार एक के बदले हजार गुना फल देंगे और कोशिश करके सबको खुदा के सच्चे रास्ते निजानन्द सम्प्रदाय पर चलाएंगे। इनके जैसा करने वाला दूसरा कोई नहीं होगा।

Nijanand App